रात्रि क्लास 21–6–68 :– बहुत ही आते रहेंगे। कोटों में कोऊ ही निकलेंगे। पहले 10, फिर 100, फिर हजार, फिर 10 हजार ऐसे वृद्धि होती रहेगी। पत्थरों को पारस बनाना है। भक्तिमार्ग में तो कुछ भी मिलता नहीं है भक्तों को पता ही नहीं। कितनी महिमा होती है अनेक भाषाओं में। कुछ भी नहीं मिलता। भल सा0 होती(ा) है। देवियों को ब(ी)ल चढ़ाते हैं। भक्ति और ज्ञान में रात दिन का फर्क है। भक्तों को कुछ पता ही नहीं है। क्या क्या करते हैं। ड्रामा अनुसार पेट भरता है बड़े साहूकार बन जाते हैं। जिनके पास पैसे रहेंगे उनका क्या होगा? सभी खत्म होते जावेंगे। बच्चों ने भक्ति और ज्ञान का राज़ समझा है अच्छी तरह से। कितने वेद शास्त्र पढ़ते हैं। बच्चे जानते हैं बाबा हमारा सुप्रीम टीचर है। बड़ा इम्तहान पढ़ाते हैं। इससे बड़ी पढ़ाई होती नहीं है। फिर भी बहुत हैं पढ़ाई नहीं पढ़ते हैं। मुरली नहीं मंगाते हैं। भगवान पढ़ाते हैं तो ऐसे टीचर की पढ़ाई पढ़नी चाहिए ना। बाप को भी याद करना है। पढ़ना है नहीं तो मुफ्त बहुत घाटा डालेंगे। पढ़ाई में रेस तो होती है ना। बाप मेहनत तो देते नहीं हैं। बाप कहते हैं मैं गुह्यते गुह्य प्वाइंट्स देता हूँ। बच्चों को समझना चाहिए। ड्रामा अनुसार, टाइम अनुसार भक्ति में वेस्ट गया। कितने हैं योग आदि कठिन तपस्या करते हैं। फायदा कुछ नहीं है। कितना अपना नाम करते हैं। करप्शन, एडल्ट्रशन। एक भी मनुष्य नहीं जो ठगी नहीं करता हो। भारत का राजयोग नामी है। यह तो किसको पता नहीं है कि ब्रह्मा कुमारियाँ ही ब्राह्मण बन सो फिर देवता बनते हैं। ब्रह्मा भी पढ़ते हैं। यह सभी बातें शास्त्रों में है नहीं। शास्त्र तो हैं मनुष्य के बनाई(ए) हुई(ए)। तुम लिख भी सकते हो बहुत गालियाँ देते हैं सर्वव्यापी कहते हैं, बड़ा डिफेम करते हैं। तुम्हारे पास गवर्नर भी कहता था भगवान सर्वव्यापी है। इनको भी तुम कह सकते हो आप बाप को सर्वव्यापी कह गाली देते हो। बाप ने तो कहा है हियर नो ई(ी)वील, सी नो ई(ी)वील। यह सभी पशु पत्थर बुद्धि हैं। डरना न है। तुम इनसल्ट थोड़े ही करते हो। वह तुम्हारे बाप की इनसल्ट करते हैं। भगवानुवाच ऐसे अधर्मियों

2

का विनाश करता हूँ। सर्वव्यापी कहने वालों को फट से बोलो। विल पावर इसको कहा जाता है। वह पावर नहीं है तो वह उछल निकलती नहीं है। बेहद के बाप को तुम गालियाँ देते हो। ठिक्कर–भितर में ठोक देते हैं। हम ब्राह्मण सारे(ी) गर्वमेन्ट पर भी केस करेंगे। वह है कौरव गवर्मेन्ट, यह है पाण्डव गवर्मेन्ट। इतनी ग्लानी करते हैं; इसलिए विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। जो प्रीत रखते हैं वह विजयन्ति। हम बाप से वरसा लेते हैं। तुम गाली देते हो तो तुम्हारा विनाश तो जरूर होना चाहिए। योग युक्त हो युक्ति से ऐसा कहना चाहिए जो उनको गुस्सा न आवे। भगवानुवाचः है ना मेरी ग्लानी करते हैं। सबसे अधर्मी तो वह ठहरे जो मेरी ग्लानी करते हैं। यह गीता का युग है ना। पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया का(ी) स्थापना यह तो बाप का ही काम है। बाप आकर उपकार करते हैं खुद तो विश्व का मालिक नहीं बनते। बच्चों को बनाते हैं। फिर जय–जयकार हो जाता है। गाली देने वाले का विनाश जरूर होना है। हाय–हायकार करते मरेंगे। भगवानुवाचः है ना। बहुत बच्चे माया से हार खाते हैं। पढ़ाई छोड़ देते हैं। यह भी नई बात नहीं। अनेक बार हुआ है। यह ड्रामा का चक्र है। फिर यह ज्ञान सतयुग में नहीं होता। अभी तुमको मिल रहा है। फिर तुम हरावेंगे। कितना(ी) बार हराया और जीता होगा। कितनी सहज समझने की है। भक्तों में ज्ञान नहीं है तो भक्ति में जैसे सड़ते हैं। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के वस्त्र हैं सड़ गये हैं। अभी घर जाना है। जाने लिए ही तो तरफ(तड़प) रहे हैं। एक्युरेट कर्मातीत अवस्था को पाकर फिर जाना है। जल्दी नहीं जाना है। बाबा अभी ही पढ़ाते हैं तो फिर कल्प बाद भी पढ़ावेंगे। बेहद का बाप बेहद की नॉलेज बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं पढ़ाई को छोड़ो नहीं। कहाँ भी तुम मुरली मंगा सकते हो; परन्तु बाबा पर इतना लव नहीं है। स्त्री पुरुष का कितना लव होता है। यह तो बाप डबल सिरताज बनाते हैं। ऐसे बाप के पास कितनी जल्दी2 रिफ्रेश होने आना चाहिए। बाबा बाबा है टीचर है सर्वव्यापी फिर कैसे हो सकता। यह है गाली। बाबा ने समझाया है तुम केस भी कर सकते हो। एक की बायोग्राफी में दूसरे का नाम डालना..... तुम सिर्फ योग में तीखे हो फिर देखना कितना नशा आता है। राजे–रजबारे आदि सभी तुम्हारे पास आवेंगे; परन्तु अभी नहीं।

रिवोल्युशन हो जाये। तुम पर कलंक लगते हैं कलंकीधर बनने लिए। यह सारा खेल बना हुआ है। जो बाप बैठ समझाते हैं। नम्बरवार तो है ही। महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे हैं। यह राजधानी स्थापन होती है। तुम्हारा अविनाशी पार्ट है। तुम कब थकते नहीं हो। अभी तुम जानते हो इस चक्र को हम जानते हैं। कितना वन्डरफुल खेल है। रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त को जान कितनी खुशी होती है। अन्दर में आना चाहिए हम यह शरीर छोड़कर जाकर प्रिन्स बनेंगे। नया पार्ट बजावेंगे। यह खुशी होनी चाहिए। अगर याद में रहते हो तो। नहीं तो वह खुशी नहीं रहती। अच्छा बच्चों को गुडनाइट।

प्वाइंट्स :– बाप मूल बात बच्चों को यही समझाते हैं अपन को आत्मा समझ देही अभिमानी बनो और बाप को याद करो तो पाप कटे। बिगर याद के पाप कटते नहीं और बढ़ते हैं। गंगा स्नान से कोई पाप कट न सके। उसमें तो सारा किचड़ा पड़ता है। उनको फिर तीर्थ समझ स्नान करते हैं; परन्तु उनसे कोई पावन तो हो न सके। सर्व का सद्गति दाता एक ही बाप है। बाप तुम बच्चों को कहते हैं मुझे भी यहाँ आना पड़ता है। शरीर भी मैं वह लेता हूँ जो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। बहुत जन्मों के अन्त का जन्म किसका होगा? ल0ना0 ही पहले नम्बर थे। जो फिर 84 जन्म ले यह बने हैं। वह नाम–रूप तो नहीं है। भिन्न नाम–रूप चला आता है। फिर पिछाड़ी में आकर सांवरा बने हैं। आत्मा ही गोरी और सांवरी बनती है। आत्मा पतित तो शरीर भी ऐसा मिलता है। बाप फिर ज्ञान चिक्षा पर चढ़ाते हैं। तो तुम गोरा बन जाते हो। ज्ञान देते हैं ज्ञान सागर निराकार बाप। भक्तिमार्ग में तो माथा टेकते2 पैसे खर्च करते2 अभी बिल्कुल ही कंगाल बन पड़े हैं। जब कौड़ी लायक बनते हैं तो फिर बाप आकर हीरे लायक बनाते हैं। अभी बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। जो सब आत्माओं का बाप है। उनको फिर भितर में मिला देते हैं। अच्छा ओम।